International Journal of Applied Research 2015; 1(13): 210-212

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(13): 210-212
www.allresearchjournal.com
Received: 01-10-2015
Accepted: 04-11-2015

डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हि प्र.

Correspondence
डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हि प्र.

मृगनयनी उपन्यास की तात्विक समीक्षा

डॉ. शिवदत्त शर्मा

साहित्य की विभिन्न विधाओं में से एक प्रमुख विधा उपनयास है। गद्यात्मक विधाओं में इसे सबसे लोक प्रिय विधा माना जाता हैं, जिसमें जीवन के विभिन्न पक्षों पर सविस्तार विवेचन का अवसर प्राप्त होता है। प्रेम चन्द जैसे महान् उपन्यासकारों ने इस विधा को नई उंचाइयां प्रदान की हैं। आज विश्व के गिने चुने लोक प्रिय साहित्यिक विधा में उपन्यास का स्थान प्रथम है।

वृंदावनलाल वर्मा हिन्दी के प्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यासकार हैं जिन्होंने इतिहास और कल्पना का सामंजस्य विठा कर उपन्यास विधा को अत्यन्त लोक प्रिय बना दिया है। इतिहास अपने आप में एक शुष्क विधा है तथा प्रायः इसे मन से पढने वालों की संख्या नगण्य ही होती है परन्तु इतिहास को कल्पना की चाशनी में डुबो कर महान् कलाकारो, रचनाकारों ने उपन्यास के माध्यम से इसे लोक प्रिय बना दिया है तथा इसी बहाने पाठक मनोरंजन के साथ साथ इतिहास की भी जानकारी प्राप्त करते है।1

मृगनयनी उपन्यास इतिहास ओर कल्पना का संगम है। इस की तात्विक समीक्षा के मुख्यतः छः आधार हैं जिनको आधार बना कर इस उपन्यास का मूल्यांकन किया जा सकता है। ये छः तत्व इस प्रकार हैं–

1 कथानक 2 पात्र 3 वातावरण 4 संवाद 5 भाषा शैली 6 उद्देश्य

इन छः तत्वों के आधार पर मृगनयनी उपन्यास की समीक्षा की जाएगी तथा शिल्प की दृष्टि से इन तत्वों की समीक्षा कर उपन्यास की शिल्पगत विशेषताओं को प्रकाश में लाया जाएगा।

1 कथानक

उपन्यास विधा में कथानक सबसे महत्वपूर्ण तत्व है। उपन्यास रूपी भव्य भवन का निर्माण इसी के आश्रय से निर्मित होता है। कथानक में जो भी आवश्यक गुण रोचकता, सम्बद्धता, स्वाभाविकता, मौलिकता, जिज्ञासा आदि सभी गुण मृगनयनी उपन्यास में विद्यमान हैं। निश्चित रूप से इस अच्छे उपन्यास की सफलता एवं प्रसिद्धि के लिए ये सभी तत्व कारण हैं।

मृगनयनी उपन्यास एक ऐतिहासिक उपन्यास है, तथा इसमें ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर के जीवन और राज्य का कलात्मक उल्लेख किया है। इस उपन्यास में इतिहास और कल्पना का मिश्रण है, तथा वर्मा जी ने विभिन्न घटनाओं को कल्पना एवं संयोग सूत्रों से अत्यन्त निपुणतापूर्वक पिरोया है, जिससे कथानक में इतिहास के तथ्यों को इस प्रकार संयोजित किया है कि वे पाठक का मनोरंजन भी करते हैं। सारा कथानक 72 खण्डों में विभाजित किया है परन्तु विभाजन से कथानक पर कोई कुप्रभाव नहीं पडा है। इस उपन्यास में राजा मानसिंह और मृगनयनी की मूल रोमानी कथा के साथसाथ कुछ काल्पनिक पात्रों का समावेश करके कथानक को रोचक एवं सुगठित बनाया गया है। प्रंधान कथा का सम्बन्ध राजा मानसिह तथा मृगनयनी से है। लाखी और अटल का प्रसंग मुख्य कथा का प्रमुख प्रसंग कथानक है जिसे मुख्य कथा के साथ अच्छे ढंग से संगठित किया गया है। इसके कथानक की यह विशेषता है कि यह कहीं तो तीव्र गति से आगे बढता है तो कहीं कथानक मन्द पडता दिखाई देता है। कहीं कहीं घटनाओं की सूचना मात्र देकर कथानक को तीव्र गति दी गई है। राजा मानसिंह और निन्नी के विवाह तक कथानक का पूर्व भाग समाप्त हो जाता है। निन्नी मृगनयनी बन कर ग्वालियर चली जाती है तथा विवाह के उपरान्त लाखी और अटल के जीवन में विवाह को लेकर हलचल मच जाती है। बोधन पुजारी द्वारा जातपात का प्रश्न खडा करने के बावजूद अटल और लाखी परस्पर विवाह बन्धन में बंध जाते हैं। उन्हें गांव वालों की छीटाकशी का सामना करना पडता है और वे दोनो गांव छोड कर नटों के साथ चले जाते है। मृगनयनी ग्वालियर में जाकर संगीत–कला और चित्रकला सीखने लगती है। महल में परिस्थियां विकट होने के कारण वह मानसिह की आठ रानियों विशेषकर मोहिनी की ईर्ष्या का भाजन बनती है। इसके बाद

नरवर, ग्वालियर, पर ग्यासुद्दीन और सिकन्दर लोदी के आक्रमणों के मध्य से गुजरती हुई कथा कई प्रकार के छोटे प्रसंगों को समेटती हुई तीव्रगति से आगे बढती है। सिकन्दर लोदी द्वारा राई की गढी पर आक्रमण का मुकाबला करते हुए लाखी और अटल के वीरता पूर्ण बलिदान के साथ ही कथा समापन की ओर पहुंचती है। उपन्यास में महमूद बर्घरा और नसरुद्दीन के प्रसंग अलग चिपकाए हुए प्रतीत होते हैं। ऐसा लगता है कि वर्मा ने इन प्रसंगों का प्रयोग ऐतिहासिकता को जीवन्त रखने के लिए ही किया है।
इस तरह कथानक अत्यन्त विस्तृत है फिर भी उपन्यास कार ने बडी कुशलता से इसे सुगठित करने में सफलता प्राप्त की है। इसमें ऐतिहासिक रोमांस के साथ वैचारिक प्रवाह भी निरन्तर बना रहा है जिसे उपन्यास कार के कला कौशल का परिणाम कहा जा सकता है।

पात्र–परिचय

उपन्यास में पात्रों का चरित्रचित्रण बडा महत्वपूर्ण होता है। जिस उपन्यास में कथानक के अनुरूप पात्रों का चयन किया जाता है उस रचना की सफलता असंदिग्ध होती हैं। उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द ने ठीक ही कहा है–मैं उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र मात्र समझता हू। उपन्यास में मानव जीवन के विविध रूपों को चित्रित किया जाता है। उपन्यासकार अनेक प्रकार के पात्रों का चरित्र–चित्रण करता है। पात्रों के अभाव में उपन्यास की प्राण प्रतिष्ठा नहीं हो सकती। पात्रों के चरित्र में स्वाभाविकता, सजीवता, संवेदनशीलता, आदि गुणों का होना नितान्त आवश्यक है।2
मृगनयनी अद्भुत उपन्यास है, इसमें जीवन के विविध पक्षों को सुन्दर ढंग से पिरोया गया है। यद्यपि यह उपन्यास ऐतिहासिक उपन्यास है फिर भी कल्पना के बिना इसमें रोचकता, तथा घटनाओं को एक सूत्र में बांधने के लिए, वैचारिक प्रवाह उत्पन्न करने के लिए काल्पनिक पात्रों की भी सृजना अनिवार्य होती है। इस उपन्यास में प्रमुख एवं गौण दोनों प्रकार के पात्रों की सृजना की गई है। मृगनयनी, राजामानसिंह, लाखी और अटल प्रमुख पात्र हैं। बोधन, विजयजंगम, निहालसिह, आचार्य बैजनाथ, कला सुमन मोहिनी, पिल्ली, सिकन्दर लोदी, बर्घरा, नसीरुद्दीन, राजसिंह आदि गौणपात्र है। मृगनयनी, ऐंतिहासिक उपन्यास हैं इसलिए इसमें मानसिंह, मृगनयनी, सिकन्दर लोदी, ग्यासुद्दीन, नसीरूद्दीन, महमूद बर्घरा, बोधन पुजारी, विजय जंगम, आदि शुद्ध ऐतिहासिक पात्र हैं। कला, पिल्ली, नायकिन, आदि काल्पनिक पात्र हैं। लाखी और अटल इतिहास सम्मत काल्पनिक पात्र हैं। उपन्यास में आदर्श स्थापित करने के लिए तथा सत्य का पक्ष लेने के लिए कुछ आदर्श पात्र मृगनयनी, मानसिंह, अटल बैजू, आदि का सृजन भी कथानक को गति प्रदान करता है।
इस उपन्यास में पात्रों का सृजन कथानक के अनुरूप ही किया गया है। पात्रों के अनुकूल चरित्र और शीलनिरूपण इस उपन्यास की विशेषता है। पात्रों के चरित्रचित्रण के लिए वर्मा जी ने आत्मकथात्मक कथन, या स्वगत कथन द्वारा, संवादों द्वारा तथा कार्य एवं व्यवहार आदि पद्धतियों को अपनाया गया है। पात्र अपने कार्य से ही अपने चरित्र का उद्घाटन करतें हैं। मृगनयनी उपन्यास के पात्रों का चरित्रचित्रण बाह्य एवं अन्तः संघर्ष एवं द्वन्द्व दिखाया गया है। पात्रों की मानसिकता से भी पात्रों के चरित्र का अवलोकन हो जाता है। पात्रों का अन्तर्द्वन्द्व भी स्पष्ट दिखाई देता है। इस दृष्टि से उपन्यासकार पात्रों के चरित्र को अनुकूलता से स्पष्ट करने में सफल रहे हैं।

2 देशकाल और वातावरण

उपन्यास में मौलिकता, स्वाभाविकता और विश्वसनीयता के गुण वातावरण की सजीव एवं यथार्थ सर्जन से ही उत्पन्न होते हैं। अतः उपन्यास में वातावरण की योजना अत्यन्त आवश्यक तत्व है। ऐतिहासिक उपन्यास के लिए यह तत्व नितान्त आवश्यक हो जाता है, क्योंकि ऐतिहासिक वातावरण ही उपन्यास में ऐतिहासिकता का गुण उत्पन्न करता है। वर्मा जी के अधिकांश उपन्यासों का रंगमंच बुंदेल खण्ड रहा है। मृगनयनी उपन्यास में पन्द्रहवीं शताब्दी के अन्तिम भाग और सोलहवीं शताब्दी के आरम्भिक वर्षों के इतिहास का वर्णन किया गया है। उस समय ग्वालियर पर राजा मानसिंह तोमर का राज्य था। सारा देश छोटेछोटे राज्यों में बंटा हुआ था। दिल्ली में सिकन्दर लोदी, गुजरात में महमूद बर्घरा तथा मांडू में ग्यासुद्दीन खिलजी, का अधिपत्य था। नरवर अब ग्वालियर के अधीन था और उसका सूबेदार राजसिंह उन दिनों चिंदेरी में रह रहा था तथा नरवर के किले को दोबारा हथियाने की कोशिश कर रहा था। कुल मिला कर चारों ओर अराजकता का वातावरण था। साधारण जनजीवन त्रस्त था। धनसंचय, लूटघसीट, मारकाट की आकांक्षा, स्त्रियों के अपहरण, बलात्कार, अन्य राज्य को हथियाने की लालसा मजहब विस्तार का लालच आदि अनेक कारणों से छोटेछोटे राज्यों के राजा परस्पर लडते रहते थे। देश में केन्द्रीय शक्ति का अभाव था। वर्मा जी ने इन्हीं परिस्थितियों से अपने उपन्यास मृगनयनी के कथानक का आधार बनाया। उन्होंने इतिहास की खोजबीन कर तथ्य जुटाए और उन्हें विचार, विवेक, कल्पना के आधार पर कार्य–कारण श्रृंखला प्रदान की।3
उपन्यास मृगनयनी की निन्नी का ग्रामीण जीवन इतिहास के तात्कालीन जीवन से पूर्णतः मेल खाता है। खेती से सम्बन्धित असुविधाएं और भौगोलिक वातावरण के कारण राई गांव के लोगों का जीवन निर्वाह कैसी कठिन परिस्थितियों में हो रहा है इसका आभास इस में दर्ज है। लोगों का शिकार से पेट पालना,साधारण व मोटे कपडे पहनना, रात को खेती की रक्षा करना, मचान पर सोना, खेती की फसल का लगान निकालना, नटों का गांव–गांव घूमना, ग्रामीणों का साधारण गहने हंसुली आदि पर गर्व करना, आपस में ईर्ष्या–द्वेष व निन्दा में आनन्द लेना, होली जैसे पर्व पर गांव भर में उत्साह का वातावरण बन जाना आदि अनेक सजीव चित्र इस उपन्यास में खींचे गए है ंजिनमें वहां के रहन सहन, रीति रिवाजों, आचार–व्यवहार की तस्वीर इस ढंग से उपन्यास में पेश की गई है कि सारे इतिहास और जनजीवन का सम्पूर्ण क्रियाकलाप हमारे समक्ष उपस्थित हो जाता है। ऐसा लगता है कि हम सब वहीं रह रहे हों। यही नहीं पन्द्रहवीं शताब्दी के ग्वालियर के किले व महलों का सजीव चित्रण भी इसमें किया गया है। पाठक अपने आप को तात्कालीन ग्वालियर के किले में खडा अनुभव करता है। इस तरह मृगनयनी उपन्यास का कथानक वातावरण के रंग में रंग कर ही ऐंतिहासिक रूप धारण करता है।

3 संवाद

अन्य तत्वों की तरह संवाद तत्व भी उपन्यास में अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाता है। उपन्यास में अच्छी संवाद योजना से कथानक को गति प्राप्त होती है। संवाद के द्वारा ही पात्रों का चरित्र उद्घाटित होता है। पात्रों के मन में अवस्थित विचार संवादों के द्वारा ही साकार हो कर पाठकों के समक्ष उपस्थित होते हैं तथा पात्रों के विषय में धारणा स्थापित करते है।
इस तरह कथानक के विकास और पात्रों के चरित्रों की गुत्थियों को सुलझाने में संवादों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है।वर्मा जी ने इस उपन्यास में उत्कृष्ट संवाद योजना बनाई है। सभी पात्रों के संवाद कथानक को उचित गति प्रदान करते हैं। होली के वातावरण में परस्पर संवाद योजना कथानक को जीवन्त बना देती है। एक उदाहरएा देखिए–
बाहर निकलो बाहर, तुमको सिर से पांव तक न रंग दिया और नचा न दिया तो मेरा नाम निन्नी नहीं। मरकिया वाली ने ललकारा। यहां होली का वातावरण सजीव हो उठा है।
इसके अतिरिक्त मृगनयनी के संवाद सर्वत्र भावानुकूल हैं।सरलता और स्पष्टता उनकी प्रमुख विशेषता है। छोटे-छोटे संवादों से उपन्यास में नाटकीयता का समावेश हो गया है। संक्षिप्त संवाद का एक उदाहरण देखिए–
अगुआ ने मुखिया से पूछा– तुम्हारा नाम,?

पोटा।
उस लडकी का नाम?
पिल्ली।
इस तरह इस उपन्यास में सजीव, सार्थक, संक्षिप्त, स्वाभाविक, भावानुकूल एवं सरल संवादों
का प्रयोग उपन्यास की सफलता में सहायक सिद्ध हुआा है।

4 भाषा– शैली

वर्मा जी ने इस उपन्यास में साहित्यिक भाषा का सुन्दर प्रयोग किया है। भाषा पर वर्मा जी की असाधारण अधिकार है। पाठक बिना किसी मानसिक श्रम के उपन्यास में वर्णित विषय को सहज ही समझ लेता हैं। भाषा में जरा भी जटिलता प्रतीत नहीं होती भाषा काव्य मय होती हुई भी अलंकारों से ढकी हुई नहीं है। डॉ श्री लक्ष्मी नारायण टण्डन ने लिखा है कि–वर्मा हर एक बात को नपी–तुली भाषा में लिखते हैं। व्यर्थ का तूल नहीं बढाते। संस्कृत के तत्सम शब्दों के साथ साथ स्थानीय बोली के शब्दों का भी सफल प्रयोग किया है।

डॉ शान्ति स्वरूप गुप्त ने वर्मा जी के उपन्यासों की भाषा पर टिप्पणी करते हुए कहा है कि–उनकी भाषा सीधी, सरल, और सरस है। उसमें प्रसाद गुण विद्यमान है तथा सर्वसाधारण के सिए सुगम्य है। इसमें लोक भाषा के प्रचलित शब्दों का प्रयोग उपन्यास में स्वाभाविकता पैदा करता है। भाषा में सुन्दरता पैदा करने के लिए तथा उसको व्यावहारिक रूप देने के लिए अनादर, आघात, अन्तर्वेद जैसे तत्सम शब्दों के साथसाथ खेत, घर, दुबली, गाल, व्याह, आदि तद्भव और खिराज, फतह, पाबन्द, फिलहाल, खुशामन्द, खुशहाल, जैसे अरबी–फारसी शब्दों तथा छबा, आवरा, मकूटा, झीम, टुंग, अटूने, ठौरिया, केलना, अथाही, आदि आंचलिक शब्दों का प्रयोग भी किया है। उस समय लोकप्रचलित मुहावरों का प्रयोग करके भाषा में सारगर्भिता के गुण को भी उत्पन्न किया गया है। छोटे और बडे सभी प्रकार के वाक्यों का प्रयोग इस उपन्यास में हुआ है।4

5 उद्देश्य–

उद्देश्य वह तत्व है जिसके लिए उपन्यास के अन्य तत्वो के योग से उपन्यास की रचना की जाती है। ऐतिहासिक उपन्यास होने के नाते इसमें एक काल खण्ड के विगत जीवन को उद्घाटित किया गया है। वर्मा जी के अनुसार विगत जीवन को व्यक्त करके ही वर्मा जी वर्तमान जीवन को सुधारने की प्रेरणा देते हैं। वे कहते हैं– प्राचीन में बहुत कुछ अच्छा था, कुछ बुरा। बुरे के हम शिकार हुए अच्छे ने हमें सर्वनाश से बचा लिया। क्या वर्तमान और भविष्य के लिए हम प्राचीन से कुछ ले सकते हैं ? प्राचीन की गलतियों से बच सकते हैं। चर्तमान का हर क्षण भूत और भविष्य में परिवर्तित होता रहता है। कोई किसी से अलग नहीं। अतः स्पष्ट है कि वर्मा जी इतिहास से अच्छी बातों को ग्रहण करने और बुरी बातों के त्याग की सलाह देते हैं। उन्होंने इस उद्देश्य को जनजन तक पहुंचाने का प्रयास किया है। इस उपन्यास के माध्यम से भी उन्होंने कला और कर्तव्य के समन्वय पर बल दिया है, तथा देशकी स्वतंत्रता की रक्षा और विकास के कार्यों में प्रवृत्त रहने का सन्देश दिया है। मृगनयनी के माध्यम से यही संदेश दिया गया है।वह कहती है कि– महाराज कला कर्तव्य को सजग करती रहे, भावना विवेक को सम्बल दिये रहे तथा मनोबल और धारणा एक दूसरे का हाथ पकडे रहे, मुझको और कुछ नहीं कहना है।5

इस उपन्यास का दूसरा प्रमुख उद्देश्य श्रम के महत्व को प्रतिष्ठित करना है। विजयजंगम का यह कथन–जीवन में काम करना, श्रम से उपार्जन करना, और शिव का नाम लेना, यही गौरव है। इसी में ही जीवन की सफलता है। राजा मान सिंह का कथन भी इसी बात की पुष्टि करता है।

इसके अतिरिक्त उपन्यासकार की दृष्टि में भारत की जर्जरित राजनीतिक दशा का चित्रण करना भी लेखक का एक उददेश्य है। उस समय देश छोटे छोटे राज्यों व रियासतों में विभाजित था। इन राज्यों के राजा एक दूसरे को नीचा दिखाने के लिए, राज्य विस्तार के लिए, स्त्री पाने के लिए, युद्ध करते रहते थे जिसका नुकसान जनता को भुगतना पडा। सिकन्दर लोदी और ग्यासुद्दीन के ग्वालियर आक्रमण, इसी विभीषिका के उदाहरण हैं। किसानों की खेती का नुकसान, मन्दिरों की मूर्तियों को नष्ट करना आदि इसी प्रकार की घटनाएं हैं। इस तरह युद्ध विभीषिका पर प्रकाश डालना उपन्यास का उद्देश्य है। जाति गत भेदभाव के दुष्परिणामों से भी अवगत कराना उपन्यास का उद्देश्य है।

मृगनयनी उपन्यास में नारी को प्रेरणा दायनी शक्ति के रूप में स्वीकार किया गया है।इसे वर्मा जी ने लाखी और मृगनयनी के चरित्र–चित्रण के माध्यम से व्यक्त किया है। इसी तरह बहुविवाह प्रथा का भी व्यंग्यात्मक चित्रण करके उसकी निरर्थकता को सिद्ध किया है।

इस तरह कहा जा सकता है कि मृगनयनी उपन्यास शिल्प और औपन्यासिक कला की दृष्टि से सफल रचना है। वर्मा जी ने इस उपन्यास के माध्यम से अपनी कला का सुन्दर परिचय दिया है।

सन्दर्भ सूचि

1 डॉ नगेन्द्र हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ86
2 डॉ मधुरेश हिन्दी उपन्यास का विकास पृ164
3 चन्द्र कान्त आधुनिक हिन्दी उपन्यास–सृजन और आलोचना पृ87
4 शिवदान सिंह चौहान हिन्दी साहित्य के अस्सी वर्ष पृ146
5 ज्योत्स्ना श्री वास्तव हिन्दी उपन्यासों में प्राचीन और नवीन जीवन मूल्यों का संघर्ष पृ167